

V

(Printed Pages 4)

(20226)

Roll No:

LL.M. - I Sem.

L-48

LL.M. Examination, Dec.-2025

Legislative Oughts, Interpretation

And Judicial Process

(L-1003)

Time : Three Hours]

[Maximum Marks : 70

Note : Attempt any **five** questions out of the following ten questions. Each question carries equal marks.

निम्नलिखित दस प्रश्नों में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न समान अंकों का है।

1. Nature has placed mankind under the governance of two sovereign masters, pain and pleasure. It is for then alone to pointout what we ought to do and as well as to determine what we shall do'.- Bentham, critically examine this statement.

P.T.O.

प्रकृति ने मानव जाति को सुख और दुख, इन दो सम्प्रभु स्वामियों के अधीन रखा है। यह बताना कि हमको क्या करना चाहिए और यह निश्चित करना कि हम क्या करेंगे? उन्हीं का काम है।- बेन्थम इस कथन का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

2. The foundation of democratic state is the respect for public opinion. Comment.

लोकमत का आदर प्रजातांत्रिक राज्य की नींव है। टिप्पणी कीजिए।

3. Do you agree that judicial activism of our supreme court is largely based upon Roscoe Pound's theory of social Engineering? Critically analyze.

क्या आप इस बात से सहमत हैं कि हमारे उच्चतम न्यायालय की न्यायिक सक्रियता विशेषतः रास्को पाउण्ड के सामाजिक अभियांत्रिकी के सिद्धांत पर आधारित हैं? आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

4. Critically examine the role of dissenting opinion in the supreme court.

सर्वोच्च न्यायालय में 'विसम्मत मत' की भूमिका का आलोचनात्मक परीक्षण करें।

5. What is the meaning and scope of public opinion? Do you see if there is any relationship of law and public opinion in India.

लोकमत का अर्थ और व्यापकता क्या है? आपकी दृष्टि में विधि और लोकमत में भारतीय सन्दर्भ में क्या कोई सम्बंध है?

6. 'It is said that John Rawl's theory of Justice strenthens the scope of social justice within the liberal democratic values of the western society". Discuss.

“यह कहा जाता है कि जॉन रॉल्स का न्याय का सिद्धांत पश्चिमी समाज के उदारवादी लोकतांत्रिक मूल्यों के अन्तर्गत सामाजिक न्याय के क्षेत्र विस्तार को सशक्त करता है।” विवेचना कीजिए।

7. Write an essay on Independence of judiciary in Indian scenario.

स्वतंत्र न्यायपालिका पर भारतीय परिदृश्य में एक निबंध लिखिए।

8. In the light of the views expressed by the India and Western thinkers discuss the concept of justice. Do you agree with the opinion that justice has protein face.

भारतीय एवं पश्चिमी चिंतकों द्वारा व्यक्त विचारों के आलोक में न्याय की अवधारणा की विवेचना कीजिए। क्या आप इस विचार से सहमत हैं कि न्याय का चेहरा परिवर्तनीय है?

9. In the light of doctrine of provident discuss the scope of judicial creativity.

In this connection explain tools and techniques of judicial creativity.

पूर्व निर्णय के सिद्धांत के आलोक में न्यायिक रचनाधर्मिता के क्षेत्र विस्तार की विवेचना कीजिए। इस सन्दर्भ में न्यायिक रचनाधर्मिता के उपकरणों एवं तकनीक की व्याख्या कीजिए।

10. "Law is neither neutral nor value free but is, in fact inseparable from politics". In the light of above, explain the political nature of judicial process.

“विधि न ही निष्पक्ष है और न ही मूल्य विरत बल्कि वास्तव में ये राजनीति से अपृथक है”। उपरोक्त के आलोक में न्यायिक प्रक्रिया के राजनैतिक स्वरूप की व्याख्या कीजिए।